# सीप के मोती

कहानी संग्रह

विवेक लक्ष्मणदास असरानी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

# सीप के मोती

कहानी संग्रह

## विवेक लक्ष्मणदास असरानी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-041-4"

**अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन**

**संपादक- प्रीति समकित सुराना**

**तकनीकि संपादक - संदीप सोनी**

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **विवेक असरानी**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

**SEEP KE MOTEE BY VIVAK LAXMANDAS ASRANI**

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

# भूमिका

भगवान प्यारा सा जीवन देता है जिसमे कभी खुशियों की बरसात तो कभी दुख की धूप होती है। कभी जश्ने बहारा का नज़ारा होता है, तो कभी मायूसी का ख़िजां का। जो इंसान दोनो ही स्थितियों को आसनी से झेल लेता है, लुत्फ उठाता है वही कामयाबी हासिल करता है। इंसान जिंदगी को कितना जिंदादिली से जीता इसी पर सब निर्भर करता है। इसमें साहित्य का भी बहुत बडा योगदान होता है। काव्यरस में वह बह चलता है, तो कभी कहानियों में खो जाता है।

''सींप के मोती'' कथा संग्रह में जीवन के अनेक रंगो को पेश किया गया है। कहीं रंगीन सपने है, कहीं विचारों की सुनहरी धूप है, कहीं भावनाओं की बूंदे है, तो कहीं हंसी की गुनगुनी धूप है।

समाज के विभिन्न रंगो को भी कथा संग्रह में पेश किया गया है। ''दादाजी की पेंशन'', ''दादाजी का स्कूल'' समाज के अनगिनत रंगो को पेश करती है। वही ''सच्ची दौलत'' हमें जीवन की अंतिम सच्चाई से अवगत कराती है।

कथा संग्रह में समाज के तथा जीवन के अनगिनत पहलुओं को छूने के बाद यही दर्शाया है, जीवन बिताने की बजाय जी भर कर जिओ। खुद हँसो औरो को हँसाओ।

आप सभी को शत्-शत् नमन।

# मनोगत

मैं विवेक असरानी अपना कविता संग्रह ‘‘ओस की बूंदे’’ माननीय पाठकों के आशीर्वाद के लिये प्रस्तुत करता हूॅं। मेरे प्रेरणास्त्रोत मेरी धर्मपत्नी सुजाता असरानी, मेरे परम मित्र संजय बर्वे, मेरे परम पूज्य गुरू परमानंद पांडे तथा मेरे माता-पिता को श्रेय देता हूॅं। आशा करता हूॅं कि मेरी रचनाओं में भुलचूक को आदरणीय पाठकगण तथा मेरे मार्गदर्शक माफ करेंगे।

# अनुक्रमणिका


| अ. क्र. | कहानी के नाम | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|
| १ | ऑखो का चिराग | ७ |
| २ | चोर या फरिश्ता | ८ |
| ३ | दादाजी का स्कूल | ९ |
| ४ | दादाजी की पेंशन | १० |
| ५ | दस रूपये का नोट | ११ |
| ६ | दो मीठे बोल | १२ |
| ७ | दो रूपये | १३ |
| ८ | कथनी और करनी | १४ |
| ९ | हृदय परिवर्तन | १५ |
| १० | जैसे को तैसा | १६ |
| ११ | करनी और कथनी | १७ |
| १२ | मन का बोझ | १८ |
| १३ | मिठाई | १९ |

| | | |
|---|---|---|
| १४ | मोलभाव | २० |
| १५ | नहले पे दहला | २१ |
| १६ | प्रकृति और जिंदगी | २२ |
| १७ | पुरस्कार | २३ |
| १८ | सबक | २४ |
| १९ | सबसे बड़ी खूबसूरती | २५ |
| २० | सबसे बड़ा दान | २६ |
| २१ | सच्ची दौलत | २७ |
| २२ | सेल्फी | २८ |
| २३ | शक | २९ |
| २४ | शिक्षा या संस्कार | ३०-३१ |
| २५ | तमाशा | ३२ |
| २६ | विरोधाभास | ३२ |

# ऑखो का चिराग

विदेश से आये बेटे को देख मॉ बाप फूले नहीं समाये, उनके रिटायरमेन्ट का सारा पैसा बेटे को नौकरी लगाने मे खर्च हो चुका था। मॉ ने अपने बेटे के लिये कई प्रकार के व्यंजन बनाये थे । बेटे ने मॉ बाप के पैर छुए, और पत्नी और बच्चों के साथ कमरे मे चले गया। जब मॉ ने खाने के लिये आवाज दी, तो थकावट का बहाना कर दिया। तीन दिनों तक मॉ ने मनपसंद खाना तैयार किया पर बेटा अपने परिवार के साथ मौजमस्ती में रहा। चौथे दिन बेटे ने मॉ बाप से कहा ‘‘मैं वापस लौटना चाहता हूॅ’’ तब मॉ रूंधे गले से बोली ‘‘बेटा तू आया ही कब था, ना आता तो एक आस तो थी लेकिन जब तू आकर भी ना आया तो रही सही आस भी टूट गई। हम यह भूल गये कि दौलत के पंख लगने के बाद तुम इस घोसले मे केवल अजनबी बन लौटोगे। बेटा चुपचाप अपने परिवार के साथ निकल गया और मॉ बाप अपने ऑखों के चिराग को ओझल होते देखते रहे।

# चोर या फरिश्ता

उस कोयला चोर के पीछे पुलिस लगी हुई थी आज तक वह कभी पुलिस के गिरफ्त में नही आया था। भागते-भागते अचानक उसकी नजर रेल की टूटी पटरिओं पर पड़ी, अगर वह बताता तो पकड़ा जाता। सैकड़ो यात्रियों की चीख पुकार उसके कानों मे गुंजने लगी। वह वापस दौड़ा और करीब आती पुलिस को उसने बताया। तत्काल आती हुई ट्रेन को रोक दिया गया। आज उसके हाथों में हथकडी थी, और गले में लाखो दुआओं के मोती का हार। उसने आज सैकड़ो यात्रियों को नई जिंदगी दी थी, साथ में, उसने भी नये सिरे से जीवन शुरू करने का प्रण लिया था।

# दादाजी का स्कूल

आज सोनु सुबह से बहुत उदास था, उसे दादाजी ने कहीं नजर नही आ रहे थे। उसने पापा से पूछा, तो पापा ने कहा ''दादाजी स्कूल गए हैं।'' हुआ यूँ था कि दादाजी का मम्मी पापा जी से झगड़ा होने के बाद, पापा ने वृद्धाश्रम भेज दिया था। आज सोनू दादाजी से मिलने काफी मचलने लगा तो मजबूरीवश पापा सोनू को ले वृद्धाश्रम जा पहुंचे। सोनू को देख दादाजी के ऑसू अविरल बह रहे थे। सोनू ने पूछा ''पापा क्या मुझे भी इतने आसानी से स्कूल में दाखिला मिल गया था''? तब पापा ने कहा, ''नही बेटा हमारे वक्त आसानी से दाखिला मिल जाता था, लेकिन तेरे दाखिले के वक्त तो तीन दिन लाईन में खड़ा रहना पड़ा, उसके बाद भी नेता से फोन करवाने के बाद ही दाखिला मिल पाया, ''ये बोलकर पापा गर्व से फूल गये''। तभी सोनू ने कहा, ''पापा हम आज ही आपके दाखिले की बात दादाजी के स्कूल के प्राचार्य से कर लेते है ताकी बाद में परेशानी ना हो।

इतना सुनते ही पापा का चेहरा सफेद पड़ गया, औद दादाजी के चेहरे पर कई रंग आ गए। आज सोनू और दादाजी घर के आंगन मे खिलखिला रहे थे और दूर खड़े पापा, आज जीवन का सबक सिखाने वाले अपने गुरू सोनू को प्यार भरी नजरों से निहार रहे थे।

# दादाजी की पेंशन

आज दादाजी की पेंशन आने वाली थी दादाजी खुश थे चलो आज नया ऐनक बना लूंगा। ये क्या पेंशन आते ही पुत्रवधु ने पेंशन रख ली और जेबखर्च के रूप मे पुत्र ने कुछ रकम हाथ मे रख दी और कहा पिताजी इस महीने खर्च कुछ ज्यादा है ये जेबखर्च रख लो। दादाजी को याद आया बचपन मे वो भी जेबखर्च देते थे, लेकिन तब उनका पुत्र कमाता नहीं था और दादाजी तो सारी उम्र कमा चुके थे। क्या मेरे पेंशन पर मेरा कुछ हक ही नहीं, इस सवाल का जवाब उन्हें कभी ना मिल पाया।

# दस रूपये का नोट

सेठ धनीराम हमेशा कहते “१० रूपये से मैं व्यापार शूरू किया, और आज मानों पैसों की बरसात होती है।” उनकी बातों में अहंकार का पूट था। वो पैसो के बल पर दुनिया मुठ्ठी में करना चाहते थे। चाय पीते वक्त अचानक उनका हाथ अकड़ गया, और हृदयगति थम गई। जब उनको शमशान ले जाने की तयारी हो गई, तो लोगो ने देखा, उनके हाथ मे दस का नोट है, जो उन्होंने चाय वाले को देने के लिए निकाले था। लोग उपर वाले के करिश्मे पर नतमस्तक हो गये की दस रूपये से शूरू हुई जिंदगी दस रूपये पर खत्म हो गई लाखो करोड़ो का अंहकार दस रूपये में सिमट गया।

# दो मीठे बोल

बाहर जाते बेटे को देख पिता ने आवाज दी ‘‘बेटा कहीं जा रहे हो’’ बेटे ने रूखाई से कहा ‘‘हॉं’’ पिता ने फिर पूछा ‘‘दो मिनट तुझसे बात करनी थी। बेटे ने कहा ‘‘पिताजी मुझे देर हो रही है, बाद में करेंगे’’ अचानक बेटे का फोन घनघना उठा किसी दोस्त का था। मानो वक्त वही थम गया, लंबी चौड़ी गपशप सुन पिता के मन मे प्रश्न उठा, बचपन मे दो तुतले बोल सुनने के लिए तब भी तरसता था, दो मीठे बोल सुनने के लिए आज भी तरसता हॅू। लाचार पिता की ऑंखों में बरबस दो आंसू छलक उठे।

# दो रूपये

बचे दो रूपये मांगने पर झल्लाकर कंडक्टर ने कहा ‘‘अरे अम्मा दो रूपये के लिए क्यों चकचक कर रही हो, दो रूपये में आता ही क्या है?

लेकिन अम्मा की जिद के आगे कंडक्टर ने दो रूपये थमाये और बुरा सा मुँह बनाया।

थोडी देर मे खिड़की से झांकने पर देखा कि बुढ़िया ने दो रूपये के राजगीर के लड्डू खरीदकर एक भूखे बच्चे को खिला रही है। लड़के के चेहरे पर छायी खुशी और अम्मा के चेहरे पर छाये संतोष ने दो रूपये का महत्व आज कंडक्टर को समझा दिया ।

# कथनी और करनी

नौकर रामू का अपनी पत्नी से जोरदार झगड़ा हुआ। रामू ने अपने पत्नी को कुछ अपशब्द कह दिए। सेठ गोवर्धन यह सब देख रहे थे, रामू को बुलाकर उन्होंने उसे समझाया, ‘‘देख रामू गलती सबसे हुआ करती है, हमें समझदारी से काम लेना चाहिये, इस तरह अपशब्द कहना उचित नहीं’’ रामू ने तत्काल अपने पत्नी से माफी मॉंग ली। उसी दिन रामू के हाथ से बर्तन धोते वक्त कॉंच का ग्लास गिरकर टूट गया। सेठ ने लगभग चिल्लाकर कहा, ‘‘बेवकुफ ठीक से काम नही कर सकता, कामचोर कहीं का’’, तेरे वेतन से ये पैसे कट जायेंगे। रामू को सेठ की संयम रखने की बात याद आयी। वह कथनी और करनी का अर्थ समझ गया।

# हृदय परिवर्तन

आज मन ही मन राजीव ने पिताजी को वृद्धाश्रम छोड़ने का निर्णय ले लिया था। पत्नी की जिद के आगे वह मजबूर था। पिताजी को वृद्धाश्रम छोड़ते वक्त राजीव की नजर अपने पाठशाला पर पड़ी। बीते दिन किसी चलचित्र की तरह उसके नजरों के सामने घूमने लगे। उसे वह मंजर याद आया, जब भविष्य संवारने के लिये पहले दिन स्कूल छोड़ा था। पहला दिन आँसुओं के सैलाब में बीता, हर आहट पर उसे लग रहा था, मानो पिताजी लेने आ गये हो। अध्यापक द्वारा दी गई मिठाई भी मानो फीकी लग रही थी। स्कूल छूटने पर पिताजी को आया देख उसकी आँखें खुशी से चमक उठी वह दौड़कर पिताजी के गले लग गया। लेकिन आज वह पिताजी का भविष्य तार-तार करने चला था। उसकी आँखों से अश्रुधारा बह निकली। स्कूल के दिनों की दिनभर के जुदाई के दर्द ने उसका हृदय परिवर्तन कर लिया। उसने आजीवन पिताजी के सेवा का प्रण लिया।

# जैसे को तैसा

इंस्पेक्टर रवि के बैठक में फिर कोई नया केस सेटल हो रहा था। २,००,००० के चोरी मे दस टक्के के हिसाब से २०,००० रवि को मिल चुके थे। इंस्पेक्टर रवि को पता नही था, कि दो ऑखें हमेशा पर्दे के पीछे से यह सब देखती है। सुबह से रवि अपने पर्स को लेकर परेशान थे, अचानक बेटे के बैग से बाहर झॉकते पर्स पर नजर पड़ी, तो उन्होने आग बबुला होकर बेटे को आवाज दी, बेटे ने उतने ही ढिठाई से कहा ‘‘पिताजी मुझे पर्स से २००० रूपये मिले दस टक्के के हिसाब से २०० रख लिजिए।’’ इंस्पेक्टर रवि के ऑखों से अविरल ऑसू बह निकले और उन्होंने बेटे के सामने कसम खाई कि आंईदा वह कभी ईमानदारी का दामन नहीं छोडेंगें।

# करनी और कथनी

समाज सेवक त्रिलोकचंद्र के घर बैठक का आयोजन था, विषय था ''सूखा''। सबके टेबल पर बिस्लेरी रखी हुई थी। सूखे पर जोरदार चर्चा हुई, बैठक खत्म होने पर नौकर रामू ने देखा हर बिसलेरी से लगभग दो तीन घूंट पानी पिया गया था और मालिक उसे फेकने को कह रहे थे। पानी की बर्बादी और सूखे की व्यथा का अजीब संबंध वह देखने लगा।

# मन का बोझ

विकास का आज नौकरी का पहला दिन था। वह प्रशासकीय अधिकारी के पद पर नियुक्त हुआ था। विकास अपने कक्ष में बैठा था कि चपरासी ने आकर कहा ‘‘सेठ धनंजय मिलना चाहते हैं?’’ विकास ने कहा ‘‘भेजो।’’ सेठ धनंजय ने कहा, ‘‘मेरा एक छोटा सा काम है, कीमत काफी बड़ी मिलेगी’’, विकास ने कहा, ‘‘लेकिन मैंने आपकी फाईल पढ़ी है इसमें कई अड़चनें है, और कुछ तो गैर कानूनी भी है। सेठ धनंजय ने कहा ‘‘ये सब रकम आपकी हो सकती है, कल तक आप सोच लें,’’ रातभर विकास करवटें बदलता रहा, एक तरफ लक्ष्मी दस्तक दे रही थी, तो दूसरी ओर उसे संस्कार रोक रहे थे। नींद ऑखों से कोसो दूर थी। तभी उसकी नजर दर्पण पर गई, उसकी शक्ल कुछ धुंधली सी दिख रही थी।

दूसरे दिन विकास ने सेठ को साफ शब्दों में मना कर दिया। अचानक उसका मन काफी हल्का हो गया था। घर आकर उसने दर्पण पर जमी धूल साफ की। आज उसका चेहरा साफ नजर आ रहा था। घर के दर्पण के साथ-साथ मन का दर्पण भी स्वच्छ हो उठा था।

# मिठाई

नौकरानी के बेटे को किचन से मिठाई उठाते देख, रमा आगबबुला हो गई। दो तीन थप्पड उसे रसीद कर दिए और अनाप-शनाप बकने लगी। शाम को जोरदार पार्टी चल रही थी, हर आने जाने वाले मेहमान को मिठाई की पेटी दी जा रही थी। सब मेहमान जाने के बाद नौकरानी बेटे के साथ जाने लगी तो बची हुई मिठाई रमा उसके बेटे को पकड़ाने लगी। तभी नौकरानी का बेटा बोला ‘‘मालकिन सुबह भी मै गिरी हुई मिठाई डिब्बे मे रख रहा था। मुझे ये मिठाई नही चाहिये, केवल आप से इतनी प्रार्थना है कि दो मीठे बोल मेरी माँ से कह दिया करो। उसकी बातें सुन सारी मिठाई रमा को फीकी लगने लगी।

# मोलभाव

पिज्जा खाकर रूपेश कि मम्मी ने काउंटर पर पॉच सौ का नोट दिया। कुल मिलाकर चार सौ सत्तर का बिल हुआ था। मम्मी ने बडे गर्व से कहा ‘‘Keep the change’’।

सब्जी मार्केट से सब्जीयॉ खरीदकर लौटते हुए मम्मी ने रूपेश से कहा ‘‘देखो मैंने बीस रूपये मोल भाव करके बचाये’’। रूपेश की ऑखों में गरीब दुकानदारों के पसीने से लथपथ चेहरे आ गये। रूपेश ने कहा ‘‘मम्मी आपने बीस रूपये जरूर बचाये, लेकिन लाखो रूपयों की चमक उनके चेहरों से छीन ली। मम्मी का चेहरा सफेद पड़ गया।

# नहले पे दहला

नरेश हमेशा नीता पर छींटाकसी करता, खास कर जब वह गुलाबी परिधान पहनती।

नरेश के सारे दोस्त उसे और उकसाते और कहते, ‘‘देख वो एक दिन जरूर तेरे प्यार में रंगने वाली है।’’ नीता काफी परेशान रहती थी। बूढ़े माँ बाप की परवरिश की जिम्मेदारी भी उसी पर थी। एक दिन वह अचानक नरेश के घर उसे खरी-खोटी सुनाने पहुँच गई और उसका सामना नरेश की बहन से हो गया।

उस दिन सुबह से ही बरसात चालू थी अचानक नरेश ने देखा, गुलाबी ड्रेस पहने छतरी की ओट में नीता आ रही है।

उसने सारे दोस्तों के सामने उससे बद्‌तमीजी करने की कोशिश की।

उसके प्यार के सारे रंग चंद लम्हो में ही फीके पड़ गये, जब नीता के स्थान पर खुद की बहन को पाया। वह शर्म से गड़ा जा रहा था। उसके बहन ने कहा ‘‘भैय्या नीता और मैने मिलकर यह नाटक रचा था, तुम्हे एहसास दिलाने के लिए जहाँ सम्मान दोगे, वही सम्मान पाओगे वरना खुद के नजरों में गिर गये, तो जीवनभर उठ नही पाओगे।’’ वंश का दीपक किसी बुझते हुए दीये की तरह फड़फड़ा रहा था।

# प्रकृति और जिंदगी

गॉव के पाठशाला मे निरीक्षण पर आये निरिक्षक ने एक बच्ची से सवाल किया ‘‘बेटी बताओ अमावस्या और पूर्णिमा मे क्या फर्क है।’’ तब बच्ची ने मासुमियत से जवाब दिया जब हमे चॉद जैसी पूरी रोटी मिलती है, तब पूर्णिमा होती है, और जब खाली पेट सोना पडता है तब अमावस्या होती है। प्रकृति और जीवन का अद्भुत साम्य आज पहली बार निरिक्षक को महसूस हुआ।

# पुरस्कार

कहानी प्रतियोगिता मे उसको कोई पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ था। कार्यक्रम की समाप्ति पश्चात बहुत बोझिल मन से लौटने लगा। तभी एक लडके ने उससे हाथ मिलाकर कहा ‘‘मैं बारहवीं की परीक्षा में असफल हुआ हूँ, मैं आत्महत्या की सोच रहा था, लेकिन आपकी रचना सुन कर मेरे मन में नई चेतना जाग उठी है आपका बहुत बहुत धन्यवाद’’।

आज उसे यूँ लग रहा था, मानो जिंदगी का सबसे बड़ा पुरस्कार प्राप्त हो गया हो।

# सबक

गुलाब का फूल तोड़ते वक्त अचानक राजू चीख पड़ा। पिताजी ने पुछा ‘‘क्या हुआ’’ राजू ने मासुमियत से कहा ‘‘काटा चुभ गया’’। पिताजी ने कहा ‘‘एक बार और कोशिश करो’’। राजू ने सफलतापूर्वक गुलाब तोड़ लिया। पिताजी ने कहा ‘‘चलो इसे मंदिर मे चढ़ा आओ’’ राजू के आने पर पिता ने कहा ‘‘बेटा सफलता गुलाब है तो कॉटे रूकावट। रूकावट का सामना करने पर सफलता मिलती हैं। और प्रयत्नों से मिली सफलता गुलाब की तरह होती है, जो मेहनती हाथों में अपनी महक छोड़ जाती है।’’ राजू किसी मासूम फूल के माफिक हॅस पड़ा।

# सबसे बडी खूबसूरती

ज्ञानेश्वर हमेशा सोचता, इस दूनिया में सबसे खूबसूरत क्या है? झरनो का बहना, नदियों कि कलकल, फूलों का खिलना या नारी सौदर्य ।

हरपल इसी उधेडबुन में रहता, लेकिन उसका जवाब उसे नहीं मिलता ।

एक दिन वह थका द्धारा, भूख से बेहाल चला जा रहा था, अचानक गश खाकर गिर पडा। ऑखें खुली तो देखा, एक बूढ़ी औरत उसका सिर गोद में रखकर पंखा झल रही है। बूढ़ी मॉ ने उसे खाने पीने के लिए दिया। खा पीकर जब वह तरोताजा हुआ, तब उसे अहसास हुआ की बूढ़ी मॉ के पास ना खाने का सामान बचा था, ना पानी। लेकिन बूढ़ी मॉ का चेहरा चमक रहा था। आज वह समझ गया इंसानियत ही सबसे खूबसूरत है। बूढ़ी मॉ का धन्यवाद अदा कर, वह प्रसन्न मन से चल पड़ा।

# सबसे बड़ा दान

डॉ अनूपसिंह के दानवीरता के चर्चे दूर-दूर तक फैले थे। कई धर्मशालायें, स्कूल, आश्रम उनके दानशुरता की कहानी बयॉं करते थे। उनको अपने किये दान पर काफी अभिमान था। जब भी कोई उनके दान की चर्चा करता, वह गर्व से फूल जाते। उनकी सोच थी पैसों से सब कुछ खरीदा जा सकता है।

एक दिन उन्हे खबर मिली, उनके एकलौते पुत्र के साथ दुर्घटना हो गयी है, वह जिंदगी और मौत की जंग लड़ रहा है। उसके ब्लडग्रुप का रक्त कहीं मिल नहीं रहा था। अनूपसिंह की ऑंखों में ऑसू का सैलाब बह चला था। तभी उसे पता चला की एक रिक्शेवाले के रक्तदान करने से उसे लड़के को नया जीवन मिल रहा है। उसने रिक्शेवाले से कहा ''मॉंगो कितनी दौलत चाहिये'' रिक्शेवाला हाथ जोड़कर बोला, ''बाबुजी मैने रक्तदान किया है, खून का सौदा नही'' रिक्शेवाले के किये हुए एक दान के आगे उसके सारे दान बौने साबित हो गये, और दान की असली परिभाषा उसने समझ ली । उसने उसके बाद अपने किये हुए दान पर अभिमान करना छोड दिया।

# सच्ची दौलत

रंजन और उसकी पत्नी कहीं भी जाते तो अपने बुढ़े मॉ बाप से पुछकर जाते। रंजन बहुत बडा कारोबारी था। पत्नी भी उच्च शिक्षित थी। उनके किरायेदार को यह बात हमेशा खटकती थी। एक बार उसने रंजन से इसका कारण जानना चाहा तब रंजन ने कहा, मेरे मॉ बाप के पास अनुभवों का भंडार है, मेरे पास तो निर्जीव दौलत है, लेकिन उनके पास संस्कारों की दौलत है, मै इतना बेवकूफ नहीं हूँ, सोने को ठुकराकर पीतल का सौदा करूं। उसके विचारों को सुन किरायेदार भी नतमस्तक हो गये।

# सेल्फी

धनीराम किसान के आत्महत्या के कारण सारे गॉव मे बवाल मचा था। एक ने हिम्मत करके धनीराम के पत्नी से पुछा ''भौजी कल नेताजी अपने कार्यकर्ताओं के साथ आये थे ना उन्होने कोई मदद नही की'' भौजी चिड़कर बोली ''काहे की मदद ओ कुछ देने नही लेने आये थे, क्या कहते है उसे ''सेल्फी''। दूसरे दिन नेताजी के साथ किसान की तस्वीर प्रकाशित हुई साथ में मोटे अक्षरों में लिखा था ''किसान के हमदर्द नेता''

नीचे कहीं छोटे अक्षरों में किसान के आत्महत्या कि खबर छपी थी।

# शक

खिड़की के बाहर घने बादलों का बसेरा था, कल से दीप्ति के मन मे भी शक के बादल गहरा गये थे। कल अचानक नीरज के मोबाइल पर दो बार कॉल आया, और वो तुरंत निकल पड़ा, तब से दीप्ति कुछ बैचेन थी। अचानक डोर बेल बजी, धडकते दिल से दरवाजा खोला, सामने गुलाबी लिफाफा लिये कुरियर बॉय खडा था।

डबडबाई आँखो से दीप्ति ने पढा ‘‘अब तो शक और गहरा गया। लिफाफा खोलते ही सोने के कंगन नजर आये। अचानक एक पर्ची उसमें से गिर पडी। पर्ची मे लिखा था। ‘‘मेरी प्यारी पत्नी के लिए ‘‘सालगिरह मुबारक’’ फिर उसने लिफाफा उलट-पलट कर देखा तब उसे ध्यान आया की शक के अंधेरे मे आँखों की रोशनी भी धोखा खा गई। लिफाफे के ऊपर लिखा था ।

बाहर अब तेज बरसात होने लगी थी, साथ ही उसकी आँखें बरस पड़ी। कुछ देर बाद उसका मन निर्मल हो गया। खिड़की के बाहर देखा तो सूरज मुस्कुरा रहा था। बडी बेसब्री से वह नीरज की प्रतिज्ञा करने लगी।

# शिक्षा या संस्कार

उनके कोचिंग क्लास मे प्रवेश पाने के लिए विद्यार्थियों में होड़ सी लगी रहती है। बहुत कम समय में प्रोफेसर दास ने शिक्षा क्षेत्र मे काफी नाम किया था। सरकारी कॉलेज मे प्रोफेसर के तौर पर कम और निजी कोचिंग क्लास मे ज्यादा समय व्यतित करते थे ।

अपने बेटे को इंजिनियर बनाने का सपना लेकर सुशील प्रोफेसर दास के कोचिंग क्लास में जा पहुँचा। कोचिंग क्लास का शुल्क सुनकर तो मानो, सुशील के चेहरे पर हवाईयॉं उड़ने लगी। वह दफ्तर में क्लर्क के पोस्ट पर था, और इतना पैसा भरना उनके लिए नामुमकिन था। वह प्रोफेसर के आगे गिड़गिड़ाया लेकिन पैसे का नशा प्रोफेसर कें इंसानियत पर हावी था। वह टस से मस ना हुआ। आखिर काफी ना नुकुर के बाद प्रोफेसर ने थोड़ी फीस कम की। तभी प्रोफेसर का लड़का मदमस्त हाथी के तरह दाखिल हुआ। उसके मुंह से शराब की बू आ रही थी। उसने नोटों की बड़ी गड्डी उठाई और सीटी बजाता निकल गया।

तभी सुशील ने कहा, ‘‘प्रोफेसर साहब आप शिक्षा क्षेत्र मे भले नामचीन हो, लेकिन आप अपने ही घर के विद्यामंदिर मे फेल हो गये। जो अपने लड़के को ही संस्कार ना दिला पाया, आप जैसे गुरू के पास पढ़ाने से अच्छा, मेरा लड़का किसी गरीब के पास शिक्षा ले, तो ज्यादा खुशनसीब होगा। अब प्रोफेसर दास अपने शिक्षा के खूबसूरत प्लास्टिक फूल को निहार रहे थे, जिसमे रत्तीभर भी संस्कार की महक ना थी ।

# तमाशा

आज फिर रास्ते पर जाम लगा था, किसी सिरफिरे ने मूर्ति तोड़ दी थी। वाहनों की लंबी कतारें लगी थी। ऑटो में से एक शख्स बार-बार रास्ता देने की गुजारिश कर रहा था। ऑटो में बीमार बच्चे की हालत बिगड़ती जा रही थी। अचानक ऑटो से तेज चीख सुनाई दी, जीता जागता बच्चा मूर्ति मे तब्दील हो चुका था। रास्ता धीरे-धीरे खाली हो रहा था, ऑटो मे मौजूद परिजनो की ऑखे एकदम से भर आयी थी।

# विरोधाभास

शमशेर वीर रस के कवि थे। उनकी कविताओं में शेर सी दहाड़ और हाथियों की शक्ति झलकती थी। उनकी कविताओं को सुन श्रोताओं की भुजा फड़क उठती थी। लेकिन वह शाम सात बजे के बाद कोई कार्यक्रम में शिरकत नही करते थे। रात होने के पहले घर पहुँच जाते थे। क्योंकि गलीयों के कुत्तों से डर जो लगता था।

# व्यक्तित्व दर्पण

**नाम** विवेक लक्ष्मणदास असरानी

**शिक्षा** विद्युत अभियांत्रिकी पदवी व पदवी पत्रकारीता

**पता** प्लॉट नं. ३६, अरिहंत अपार्टमेंट, वंजारी नगर, नागपुर-४४०००३

**संपर्क नं.** ८५५४६६३४४१, ७७०६१०२६६०

**कार्य** महाराष्ट्र राज्य पारेषण कंपनी मे विद्युत अभियंता

**प्रकाशन** विदर्भ साहित्य संघ के साहित्य मंच (साहित्यिकी ) से पिछले ५ वर्ष से जुडाव। गजल, कविता, गीत व लघुकथा लेखन, दैनिक नवभारत, नागपुर, मुस्कान, आंखे, आंखो का तारा, मासूमियत, दोस्ती इत्यादी कविताएं, नहले पे दहला, दादाजी का स्कूल, प्रकृती और जीवन इत्यादी लघुकथाएं तथा गजल प्रकाशीत।

**सम्मान** विक्रमशील हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, जिरोमाईल समाज सेवा पुरस्कार, शाखा-मुंबई द्वारा हिन्दी रत्न पुरस्कार २०१७-१८ प्राप्त।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-041-4

मूल्य 60/-